IJAER/ May- June -2022/Volume-11/Issue-3 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

वैदिक एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन

डा० शरद कुमार अग्रवाल

प्राचार्य

गाँधी इन्स्टीट्यूशन ऑफ परफैक्ट टीचिंग स्टडीज, मेरठ

शोध–सार

हमारे देश में शिक्षा पुरातन है। भारत में शिक्षा पुरातन है। भारत में शिक्षा की जड़े विदेशी नहीं है ऐसा कोई भी देश नहीं है जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में उत्पन्न हुआ हो या जिसने इतना स्थायी और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो। वैदिक युग के साधारण कवियों से लेकर आधुनिक युग के बंगाली दार्शनिकों तक शिक्षकों और विद्वानों का एक निर्विध्न क्रम रहा है।21वीं सदी की पीढ़ी की जरूरतों के अनुसार ज्ञान विवरण के तरीकों को आधुनिक बनाने के लिए, स्कूल और विश्वविद्यालय विभिन्न अनूठी प्रथाओं को अपना रहे हैं। इन पद्धतियों और नवीन शिक्षाशास्त्रों ने शैक्षिक संस्थानों को शिक्षार्थियों के कौशल को इस तरह विकसित करने में सक्षम बनाया है कि वे आत्मनिर्भर और महत्वाकांक्षी उपलब्धि हासिल करने में सक्षम हैं।

कुंजीशब्द– वैदिक एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली

प्रस्तावना–

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है यह मानव जीवन के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक निरन्तर चलती रहती है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यव्हार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की **'शिक्ष'** धातु से हुई है जिसका सामान्य अर्थ सीखना होता है अर्थात शिक्षा वह प्रक्रिया है जो ज्ञान की प्राप्ति का साधन है जिस प्रकार साध्य की प्राप्ति साधन के बिना नहीं होती है उसी प्रकार ज्ञान की प्राप्ति शिक्षा के बिना संभव नहीं है इसी विषय पर आचार्य दण्डी लिखते हैं कि यदि शिक्षा रुपी ज्योति इस संसार में न होती तो चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार ही होता अर्थात शिक्षा ज्ञान की वह ज्योति है जो मानव को ही नहीं सम्पूर्ण जगत को भी प्रकाशवान रखती है।

हमारे देश में शिक्षा पुरातन है। भारत में शिक्षा पुरातन है। भारत में शिक्षा की जड़े विदेशी नहीं है ऐसा कोई भी देश नहीं है जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में उत्पन्न हुआ हो या जिसने इतना स्थायी और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो। वैदिक युग के साधारण कवियों से लेकर आधुनिक युग के बंगाली दार्शनिकों तक शिक्षकों और विद्वानों का एक निर्विध्न क्रम रहा है। इस प्रकार वैदिक काल से वर्तमान समय तक हमारी शिक्षा की धारा अविछिन्न बहती आ रही है।

1-	वैदिक युग	—	2500 B. C. से 500 B. C.
2-	बौद्ध युग	—	500 B. C. से 1200 A- D.
3-	मुस्लिम युग	—	1200 B. C. से 1757 A- D.
4-	ब्रिटिश युग	—	1757 B. C. से 1947 A- D.
5-	स्वतन्त्रता के पश्चात	—	1947 A. D. से वर्तमान तक

डॉ० रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा है कि भारत में यह एक अत्यन्त अद्भुत बात है कि यहाँ की संस्कृति के मूल स्रोत वन हैं, नगर नहीं। यहाँ मनुष्य को पेड़, पौधों, झीलों और नदियों के संपर्क में रहने का अवसर मिला। इन वनों में मनुष्य रहता था परन्तु यहाँ खुला आकाश तथा एकांत सुलभ था। कोई भीड़—भड़क्का या धक्का मुक्की नहीं थी। इस एकांत से मनुष्य की बुद्धि कुंठित नहीं हुई बल्कि और अधिक तीव्र हो गयी। भारत के वनों और काननो ने दो महान युगों को जन्म दिया ये हैं वैदिक युग और बौद्ध युग।

वैदिक शिक्षा प्रणाली

प्राचीन काल में भारतीयों का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा से विकसित बुद्धि ही यथार्थ बल है। उन्होंने दृढ़ता से कहा था कि शिक्षा कल्पवृक्ष के समान हमारे समस्त मनोरथों को सिद्ध करती है। विद्या के बिना मनुष्य पशु समझा जाता था। प्राचीन काल में शिक्षा का तात्पर्य उस अर्न्तज्योति और शक्ति से था जिससे मानव के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक बलों का सन्तुलित विकास हो सकता था।

वेदों में शिक्षा (विद्या): मोक्ष प्राप्ति का साधन

विद्यां चा विद्यां च यस्तद्वेदोभयसह।
अविद्या मृत्युं तितर्वा विद्यामृत मश्नुते।।

यजुर्वेद 40/14

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ—साथ जानता है, वह अविद्या अर्थात मौर्पासना से मृत्यु को तरके विद्या अर्थात ज्ञान से मोक्ष प्राप्त होता है। विद्या के विषय में वेदों में बहुत कुछ कहा गया है।

भारतीय दार्शनिकों ने कहा कि सच्ची संस्कृति वह है जो परलोक और इहलोक, अध्यात्म और भौतिक जीवन, आत्मा और शरीर इन सबका समान रूप से हित और कल्याण सम्पादित करती है। यही कारण है कि ऋषियों ने यह प्रतिपादित किया था कि संसार का जो प्रत्यक्ष जीवन है उसको जाने बिना मनुष्य सर्वदर्शी नहीं हो सकता। वैदिक संस्कृति के अनुसार मनुष्य जहाँ धर्म, अर्थ और काम को प्राप्त कर सकता है साथ ही साथ मोक्ष को अपना अन्तिम उद्देश्य मानता है।

बौद्धकालीन शिक्षा

ईसा की छठी शताब्दी विश्व में जाग्रति के युग के नाम से विख्यात है। इस समय हिन्दू धर्म कर्म में कुछ दोष आने लगे। वास्तविक धर्म का लोप होने लगा इस समय में भारत में भी दो धर्मों का जन्म हुआ बौद्ध धर्म और जैन धर्म। इस प्रकार महात्मा बुद्ध ने समसामयिक परिस्थितियों के अनुकूल सरल, सुबोध बौद्ध धर्म की स्थापना की। प्रारम्भ में तो बौद्ध शिक्षा केवल बुद्ध अनुयायियों को ही प्रदान की जाती थी किन्तु धीरे—धीरे इसमें सभी लोग शामिल होने लगे थे। बौद्ध धर्म सामाजिक संकीर्णताओं से परे प्रत्येक प्राणी मात्र के कल्याण हेतु व्यावहारिक धर्म का पालन करने हेतु बल देता है। बौद्ध धर्म में मानव मुक्ति हेतु अष्ट मार्ग (Eight Fold Path) की स्थापना की गयी है, जो प्रत्येक मानव के सुन्दर आचरण को व्यावहारिक रुपरेखा प्रस्तुत करता है।

डॉ० राधा कृष्णन के अनुसार, 'भगवान बुद्ध ने वैदिक धर्म में कुछ सुधार किये वे धर्म को पूरा करने के लिए आये थे न कि उसे नष्ट करने हेतु। भारत में भगवान बुद्ध धार्मिक परम्पराओं के अनुपम प्रतिनिधि हैं। उन्होंने भारत की भूमि पर अपने पद—चिन्ह एवं देश की आत्मा, आदत एवं विश्वासों पर अपना प्रभाव छोड़ा। उनकी शिक्षाएं हमारी संस्कृति का अंग बन गयी है इसलिए एक—दृष्टि से भगवान बुद्ध वर्तमान हिन्दू धर्म के निर्माता थे।'

मुस्लिम कालीन शिक्षा

मुस्लिम शिक्षा एक विदेशी प्रणाली थी जिसका भारत में प्रतिरोपण किया गया और जो ब्राह्मणीय शिक्षा से अति अल्प सम्बन्ध रखकर अपनी नवीन भूमि में विकसित हुई। मुसलमानों के आक्रमण तथा मुस्लिम शासकों के स्थायी रूप से बस जाने से भारतीय जन जीवन में विशेष परिवर्तन हो गए। इसका प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में भी हुआ। प्रारम्भ में मुस्लिम शिक्षा शहरी क्षेत्रों तक सीमित रही। कुछ मुस्लिम बादशाहों ने वैदिक शिक्षा में रूचि ली और संस्कृत के ग्रंथो का फारसी तथा अरबी में अनुवाद कराया परन्तु अधिकतर मुस्लिम बादशाहों ने मंदिरों और विघरों को नष्ट किया और हिन्दू शिक्षा को समाप्त किया। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा किसी तरह जीवित रह गयी। हिन्दू शिक्षा प्रणाली ने मुस्लिम शिक्षा के साथ किसी तरह अलग से अपना अस्तित्व बनाए रखा।

ब्रिटिश कालीन शिक्षा

व्यापार के बाद इस देश में ब्रिटिश झंडा फहराया और इसके साथ उनकी शिक्षा का आरम्भ हुआ। भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के समय से ब्रिटिश युगीन शिक्षा का आरम्भ माना जाता है। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना से पहले ही कई देशी प्राथमिक विद्यालय थे लेकिन इन विद्यालयों की दशा विशेषकर आर्थिक दशा अत्यंत असंतोषजनक थी। इन विद्यालयों में शिक्षक एवं शिक्षार्थियों हेतु सुविधाओं का अभाव था इस कारण इन विद्यालयों में शिक्षण अधिनियम की प्रक्रिया सुचारू रूप से सम्पन्न नहीं हो रही थी। हमारे देश में अंग्रेजों के आगमन का सर्वप्रथम उद्देश्य व्यापारिक था जिसमे सर्वप्रथम पुर्तगाल व फ्रांस के इसाई भारत में व्यापार करने के लिए आये। इसके तुरन्त बाद ब्रिटिश इसाई मिशनरियों का आगमन हुआ इनका मुख्य उद्देश्य अपने धर्म का प्रचार करना था। साथ—साथ इन्होंने शिक्षा का प्रसार भी किया। अत: भारत में विदेशी शिक्षा का सूत्रपात हुआ। यह उस समय की एक नयी शिक्षा प्रणाली पुकारी गयी। ब्रिटिश कालीन शिक्षा के विकास को चार भागों में विभाजित किया गया—

प्रथम काल	—	(1757 - 1799)
द्वितीय काल	—	(1800 - 1853)
तृतीय काल	—	(1854 - 1900)
चतुर्थ काल	—	(1901 - 1947)

अंग्रेजों के प्रयासों के परिणामस्वरूप ही हमारे देश में सैंट मेरी, सोफिया, सैंट थॉमस आदि विद्यालयों का आरम्भ हुआ। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक कर्मचारी जिसका नाम चार्ल्स ग्रान्ट था, ने सन 1972 में एक पुस्तक की रचना की। इस पुस्तक का नाम था **'ग्रेट ब्रिटेन के एशियाई प्रजाजनों की सामाजिक स्थिति पर**

विचार'। अपनी इस पुस्तक में चार्ल्स ग्रान्ट ने भारतवासियों की शैक्षिक अवनति का सविस्तार वर्णन किया तथा भारतवासियों की शैक्षिक प्रगति के सम्बन्ध में अपने कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किये, जैसे— पर्याप्त संख्या में विद्यालयों की स्थापना, शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा, यथावश्यक नि:शुल्क शिक्षा देने तथा भारतवासियों के पाश्चात्य ज्ञान का प्रसार करना आदि।

स्वतन्त्रता के पश्चात शिक्षा

15 अगस्त 1947 को हमारा भारत देश स्वतन्त्र हुआ और स्वतन्त्रता की इसी पावन सुरभि में भारतीय शिक्षा के भी एक नवीन अध्याय का उदय हुआ। परतंत्रता के कारण हमारे भारत में जो विष व्याप्त हो गया था उसे दूर करने एवं नवीन चेतना जाग्रत करने लोकतन्त्र के अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति लोगो को सजग करने के लिए शिक्षा को एक नयी दिशा देने का निर्णय लिया गया। स्वतंत्रता के बाद 7 दशकों के दौरान भारत की शिक्षा प्रणाली धीरे—धीरे विकसित हुई है लेकिन अभूतपूर्व रूप से 1951 में 18% की साक्षरता दर से हम 2011 तक 73% हो गए हैं। वर्तमान में, भारत में शिक्षा प्रणाली 31.5 मिलियन से अधिक छात्रों की मेजबानी करने वाली दुनिया में सबसे मजबूत और सबसे बड़ी है।

भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली की शुरुआत 1830 में ब्रिटिश शासन के दौरान लार्ड बबिंगटन द्वारा की गयी थी जिनको देश में अंग्रेजी भाषा का पाठ्यक्रम लाने का श्रेय भी दिया जाता है। तब पाठ्यक्रम भाषा, विज्ञान और गणित जैसे सामान्य विषयों तक ही सीमित था। कक्षा शिक्षण प्रमुख हो गया और एक शिक्षक और छात्र के बीच सम्बन्ध विकसित हुआ। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली, जो पहले केवल कुलीन वर्ग के लिए सुलभ थी, पूरे समाज के लिए उपलब्ध हो गयी। सरकार के केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड ने दो समितियों की स्थापना की— एक उच्च शिक्षा के लिए और एक माध्यमिक शिक्षा के लिए। शिक्षा की चुनौतियों का समाधान करने के लिए, व्यापक शिक्षा नीतियाँ तैयार करने और देश के समग्र शिक्षा परिद्रश्य में सुधार करने के लिए। वर्तमान में भारतीय स्कूल प्रणाली में चार स्तर होते हैं— पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक।

21वीं सदी की पीढ़ी की जरूरतों के अनुसार ज्ञान विवरण के तरीकों को आधुनिक बनाने के लिए, स्कूल और विश्वविद्यालय विभिन्न अनूठी प्रथाओं को अपना रहे हैं। इन पद्धतियों और नवीन शिक्षाशास्त्रों ने शैक्षिक संस्थानों को शिक्षार्थियों के कौशल को इस तरह विकसित करने में सक्षम बनाया है कि वे आत्मनिर्भर और महत्वाकांक्षी उपलब्धि हासिल करने में सक्षम हैं। शिक्षा मनुष्य को न केवल संस्कारवान बनाती है बल्कि समाज में सामाजिक गुणों का विकास करती है। यह विचारधारा पौराणिक काल (वैदिक काल) से चली आ रही है। हमारे विचारों में हम जो आज हमारे आस—पास के वातावरण को देखते हैं तथा प्रौद्योगिकी एवं नवीन अविष्कारों से स्वयं को प्रभावित मानते हैं वह आज के ज्ञान का नया स्वरूप है।

समस्या कथन

वैदिक एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन

शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

वैदिक शिक्षा प्रणाली

वैदिक शिक्षा अर्थात् वेदों के अनुसार शिक्षा का अर्थ ज्ञान अथवा विद्या की प्राप्ति है। वेदों के आधार पर शिक्षा ज्ञान, आत्मा व ब्रह्म की खोज है। शिक्षा का उद्देश्य आत्मानुभूति व आत्मबोध है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली

वर्तमान शिक्षा प्रणाली से तात्पर्य है, कुछ सीखकर अपने को पूर्ण बनाना। इसी दृष्टि से शिक्षा को मानव—जीवन की आँख भी कहा जाता है। वह आँख जो मनुष्य को जीवन के प्रति सही दृष्टि प्रदान कर उसे इस योज्य बना देती है कि वह भला—बुरा सोचकर प्रगतिशील कार्य कर सके।

वैदिक एवं वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में उद्देश्यों की तुलना

वैदिक माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के उद्देश्य	वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के उद्देश्य
• वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति था तथा वैदिक माध्यमिक स्तर पर मोक्ष के लिए वातावरण तैयार करना था।	• वर्तमान माध्यमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास।
• वैदिक माध्यमिक शिक्षा में चरित्र निर्माण करना भी मुख्य उद्देश्य था।	• वर्तमान माध्यमिक शिक्षा में चरित्र निर्माण गौण उद्देश्य हो गया है।
• वैदिक माध्यमिक शिक्षा में जीविकोपार्जन शिक्षा का अन्य मुख्य उद्देश्य था।	• वर्तमान माध्यमिक शिक्षा में निश्चित स्तर की शिक्षा दी जाती है, जो जीविकोपार्जन हेतु पूर्ण नहीं है।
• वैदिक माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य वैदिक संस्कृति का संरक्षण और विकास करना था।	• वर्तमान माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य बहु—सांस्कृतिक (Multi-cultural) संस्कृति को बनाए रखना इसका उद्देश्य है।
• वैदिक माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य वसुधैवकुटुम्बकम की भावना का विकास करना भी था।	• वर्तमान माध्यमिक शिक्षा में वैश्वीकरण की भावना के अंतर्गत शिक्षा, तकनीकी और व्यापार के क्षेत्र में समावेश करना है।
• वैदिक शिक्षा में विद्यार्थियों की नेत्रत्व क्षमता का विकास।	•वर्तमान शिक्षा में विद्यार्थियों की नेत्रत्व क्षमता का विकास जैसे— उच्च कक्षा के विद्यार्थी आदि।
• वैदिक माध्यमिक शिक्षा सह—अस्तित्व पर आधारित थी।	• वर्तमान शिक्षा व्यक्तिगत विकास पर आधारित है।
• विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर गुरु द्वारा अपनी बात प्रस्तुत की जाती थी।	• शैक्षिक वातावरण को ध्यान में रखकर शिक्षक द्वारा अपनी बात किया जाना।
• गुरु द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श व्यक्तित्व प्रस्तुत किया जाता था।	• शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष दोहरा व्यक्तित्व प्रस्तुत किया जाता है।
• समायोजनशीलता का विकास— विद्यार्थियों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक समायोजन को प्रोत्साहित किया जाता है।	• समायोजनशीलता का विकास— विद्यार्थियों के व्यक्तिगत समायोजन को प्रोत्साहित ही किया जाता है।
• वैदिक शिक्षा में आध्यात्मिक शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित थे। जैसे— प्रात:सभाओं में प्रार्थना एवं योग इत्यादि।	• वर्तमान शिक्षा में आध्यात्मिक शिक्षा का कोई उद्देश्य निर्धारित ही नहीं है।
• वैदिक शिक्षा के उद्देश्य आदर्शवादी थे।	• वर्तमान शिक्षा के उद्देश्य व्यावहारिक हैं।
• वैदिक शिक्षा क्रिया—केन्द्रित नहीं थी।	• वर्तमान शिक्षा क्रिया—केन्द्रित है।

वैदिक एवं वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम की तुलना

वैदिक माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का पाठ्यक्रम	वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का पाठ्यक्रम
• वैदिक कालीन पाठ्यक्रम का निर्माण गुरु के द्वारा स्वयं ही किया जाता था और गुरु समय की माँग के अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्धारण कर लेते थे। इस काल में पाठ्यक्रम का आधार स्थानीय माँग होती थी।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम का निर्माण राष्ट्रीय एवं प्रदेशीय शिक्षा परिषदों के माध्यम से किया जाता है। वर्तमान शिक्षा के पाठ्यक्रम का निर्माण स्थानीय एवं राष्ट्रीय मांगों के अनुरूप किया जाता है, जिसमे लगभग 42 परिषद् संलग्न हैं।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम धार्मिक, आध्यात्मिक एवं भौतिक था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम मात्र भौतिक है।
• वैदिक कालीन पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की रूचि एवं इच्छा को कोई भी स्थान प्राप्त नहीं था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम का चयन विद्यार्थी अपनी स्वयं की इच्छा एवं रूचि के अनुरूप कर सकता है जैसे— कला, विज्ञान, वाणिज्य वर्ग इत्यादि।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में विभिन्न वर्गों के लिए अलग—अलग शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारण किया जाता था जैसे— ब्राह्मणों के लिए पुरोहितीय शिक्षा, क्षत्रियों के लिए सैनिक शिक्षा तथा वैश्यों के लिए कृषि एवं व्यावसायिक शिक्षा देने का प्रावधान था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम किसी भी वर्ग विशेष के लिए निर्धारित न होकर विद्यार्थी की इच्छा एवं योग्यता पर निर्भर करता है। वह स्वेच्छा से विषयों का चयन कर सकता है।
• वैदिक माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम में व्यावहारिक ज्ञान से परिचित होने के लिए करके सीखने पर बल दिया जाता था।	• वर्तमान माध्यमिक शिक्षा में विभिन्न क्रियाओं द्वारा अधिगम पर बल दिया जाता है।
• वैदिक माध्यमिक शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम आध्यात्मिक था। इसमें माध्यमिक स्तर पर • **परा (आध्यात्मिक)** विषय अध्ययन किये जाते थे जिसमे— वेद—वेदांग, उपनिषद, पुराण, दर्शन एवं नीतिशास्त्र आदि। • **अपरा (लौकिक)** के अन्तर्गत इतिहास, ज्योतिष, भौतिक शास्त्र, प्राणी शास्त्र, भूगर्भ विद्या, तर्कशास्त्र इत्यादि।	• वर्तमान माध्यमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम भौतिक है। • **पूर्व माध्यमिक स्तर** एक भारतीय भाषा, गणित, सामान्य विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन आदि • **माध्यमिक स्तर पर** एक भारतीय भाषा, भौतिक व जीव विज्ञान, गणित, संगीत, चित्रकला, गृह विज्ञान आदि। • **उत्तर माध्यमिक स्तर पर** एक भारतीय भाषा, भौतिक विज्ञान, गणित, जीव विज्ञान, संगीत, चित्रकला, गृह विज्ञान आदि।
• विद्यार्थियों को ललित कलाओं का प्रशिक्षण देना।	• विद्यार्थियों को बहुआयामी कलाओं का प्रशिक्षण देना।

वैदिक एवं वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली की शिक्षण विधियों की तुलना

वैदिक माध्यमिक शिक्षा प्रणाली की शिक्षण विधियाँ	वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली की शिक्षण विधियाँ
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में ज्ञानात्मक पक्ष के विकास हेतु व्याख्यान, प्रश्नोत्तर,	•वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ज्ञानात्मक पक्ष के विकास हेतु व्याख्यान, प्रश्नोत्तर,

वाद–विवाद, संश्लेषण एवं विश्लेषण आदि शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था।	वाद–विवाद, संश्लेषण एवं विश्लेषण के अतिरिक्त शैक्षिक भ्रमण आदि शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में भावात्मक पक्ष के विकास हेतु एक ही गुरु से शिक्षा, गुरुकुल के सदस्यों द्वारा, उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों द्वारा निम्न कक्षाओं के विद्यार्थियों का शिक्षण, विद्यालय में व्यक्तित्व का भावात्मक विकास होता था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भावात्मक पक्ष के विकास हेतु शिक्षक वर्ग से अन्त:क्रिया, उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों को देखकर विकास, विद्यालय के व्यक्तित्व का भावात्मक विकास होता है।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में क्रियात्मक पक्ष के विकास हेतु व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक शिक्षा का प्रावधान नहीं था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्रियात्मक विकास हेतु व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक शिक्षण विधि जैसे– प्रदर्शन, योजना विधि, कंप्यूटर अनुदेशन, प्रयोगशाला विधि आदि का प्रयोग किया जाता है।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व था जिसमें विद्यार्थियों द्वारा गुरुओं की गायों को चराना, लकड़ी काटना, फूल लाना, पेड़ों पर चढ़ना इत्यादि।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्वपूर्ण स्थान एवं उपयोग है जिनमें एन०सी०सी०, स्काउट, खेलकूद, वाद–विवाद, क्विज, सेमिनार इत्यादि।
• वैदिक शिक्षा में श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाता था।	• वर्तमान शिक्षा में श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन शिक्षण विधि का प्रयोग भी किया जाता है।
• वैदिक काल में शिक्षा यन्त्रवत नहीं थी।	• वर्तमान काल में शिक्षा यन्त्रवत है।
• वैदिक शिक्षा पूर्णतया मौखिक थी। लिखित का स्थान नगण्य था, परन्तु प्रयोगात्मक मूल्यांकन भी किया जाता था।	• वर्तमान माध्यमिक शिक्षा मौखिक, लिखित एवं प्रयोगात्मक है। इसमें तीनों के आधार पर विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है।
• वैदिक शिक्षा में रटने पर बल दिया जाता था। जिससे सभी का ज्ञान समान था परन्तु बोध, व्याख्या एवं अर्थ अलग–अलग था।	• वर्तमान माध्यमिक स्तर पर बोध पर अधिक बल दिया जाता है।

वैदिक एवं वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्धों की तुलना

वैदिक माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध	**वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध**
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरु–शिष्य सम्बन्ध पिता–पुत्रवत थे।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध क्रेता–विक्रेता के समान हैं।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरु–शिष्य सम्बन्ध भावात्मक एवं आदर्शवादी थे।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध भौतिकता पर आधारित हैं।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरु को सर्वोपरि माना गया था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का स्थान गौण हैं।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिष्य का भरण–पोषण करने की जिम्मेदारी गुरु की ही थी। विद्यार्थियों से किसी प्रकार को कोई शुल्क नहीं लिया जाता था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक विद्यार्थी की व्यक्तिगत जिम्मेदारियों से मुक्त तथा वेतनभोगी है।

वैदिक एवं वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली के विद्यालय व्यवस्था की तुलना

वैदिक माध्यमिक शिक्षा प्रणाली की विद्यालय व्यवस्था	वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली की विद्यालय व्यवस्था
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का स्थान गुरुकुल होता था जहाँ शिक्षार्थी अपना समस्त शैक्षिक कार्य/दिनचर्या पूरी करता था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल शिक्षा का स्थान समाप्त हो गया है।
• वैदिक काल में शिक्षा वर्ग विशेष के लिए थी और शिक्षार्थी की आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए गुरुकुल सक्षम थे।	• वर्तमान काल में शिक्षा सर्वजन के लिए है। इसी कारण विद्यालयों की संख्या अत्यधिक होती जा रही है।
• वैदिक काल में पाठ्यवस्तु कम होने के कारण गुरुकुल स्वयं में पूर्ण थे। विद्यार्थी उच्च शिक्षा हेतु गुरुकुल से स्थानान्तरण करता था।	• वर्तमान शिक्षा में तकनीकी, व्यावसायिक एवं उच्च शिक्षा होने के कारण विद्यालयों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल सम्पूर्ण विकास के स्थान थे।	• वर्तमानशिक्षा प्रणाली में माध्यमिक विद्यालय में एक निश्चित स्तर की शिक्षा का ही प्रावधान है।

निष्कर्ष—

वैदिक शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति था। मोक्ष की प्राप्ति के लिए जप—तप, व्रत, ध्यान एवं हवन आदि क्रियाओं का वातावरण तैयार करना था, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगींण विकास है। वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम धार्मिक, आध्यात्मिक एवं भौतिकता पर आधारित था जबकि वर्तमान में केवल मात्र भौतिकता ही है। पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की रूचि एवं शिक्षा का कोई भी स्थान प्राप्त नहीं था जबकि वर्तमान में पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की रूचियों एवं इच्छा के अनुरूप संगठित किया गया है। वैदिक शिक्षा प्रणाली में क्रियात्मक विकास के लिए व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक शिक्षा का अभाव था जबकि वर्तमान में प्रयोगात्मक शिक्षण विधि जैसे प्रदर्शन, योजना विधि, कम्प्यूटर अनुदेशन, प्रयोगशाला आदि पर अत्यधिक सकेन्द्रण है। वैदिक शिक्षा में शिक्षक—शिक्षार्थी सम्बन्ध पिता—पुत्र समान थे जबकि वर्तमान में यह सम्बन्ध व्यक्तिगत एवं जिम्मेदारी मुक्त तथा मात्र वेतनभोगी हैं। अत: कहा जा सकता है कि वैदिक काल में समाज का स्वरूप पारिवारिक था जबकि वर्तमान में यही सम्बन्ध भौतिकता पर आधारित हैं।

सन्दर्भग्रन्थ सूची—

1- अरविन्द 'शिक्षा के आयाम' श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी।

2- अग्रवाल, एस०के० 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त' मॉडर्न पब्लिकेशन, मेरठ।

3- चौबे, एस०पी० 'भारतीय शिक्षा का इतिहास' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

4- हॉर्न, एच०ए० 'दी साइकोलॉजिकल प्रिन्सीपल्स ऑफ एजूकेशन' मैकमिलन पब्लिकेशन, न्यूयॉर्क।

5- कबीर, हुमायूँ 'इण्डियन फिलॉसफी ऑफ एजूकेशन' बॉम्बे एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

6- पाण्डेय, राजकली 'हिन्दू धर्मकोश' हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

7- पाण्डेय, रामशकल 'शिक्षा की ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्टभूमि' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।